प्रथम अध्याय

शोध परिचय

प्रथम अध्याय

1.1 प्रस्तावनाः–

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का मुख्य उददेश्य शिक्षा में अधिक से अधिक गुणवत्ता लाना है। इतना ही नहीं शिक्षा का उददेश्य बच्चों को पूर्ण विकसित करते हुए समाज के जिम्मेदार, निर्माणिक एवं उपयुक्त सदस्य होने वाले बच्चों को सक्षम करना है। विद्यालय में ज्ञान कोशल एवं दृष्टिकोण का अध्ययनकर्ता के लिए निर्माण अधिगम अनुभव तथा निर्मित अवसरों से होता है। भारत में आज के विद्यालयीन शिक्षा पद्धति में बच्चों को बौद्धिक कौशलों पर ज्यादा केन्द्रित किया जा रहा है और उसके लिए अभिभावक तथा समाज भी अग्रेसर हो रहा है।

विद्यालय में शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि जिससे छात्रायें अर्थात् अधिगमकर्ता उसके अनुभवों को विश्लेषित एवं मूल्यांकित कर सके। खूबीयाँ प्रश्नों खोजबीन तथा विचारों को स्वतंत्रतापूर्ण सीख सके। शिक्षा प्रणाली में गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि, शिक्षण के नए और गतिशील तरीके अपनाये जायें। सीखने पर अधिक बल दिया जाये और रटने रटाने की प्रक्रिया पर अंकुश लगाया जाये। अभी तक प्रचलित पद्धति से मूल्यमापन का प्रयोग विद्यार्थी की विभिन्न विषयों में पारंगतता की जाँच करने की बजाय विद्यार्थियों को केवल पास–फेल करने के लिए किया जाता रहा है। शिक्षक और मूल्यमापन को अलग समझा जाता रहा है। वास्तव में मूल्यमापन स्वतः शिक्षा का एक अविभाज्य अंग है और इसी रूप में इसे विकसित किया जाना चाहिए।

शिक्षा प्रणाली में सुधार करने के उददेश्य से अनेक शोध कार्य किए गए। उनके परिणामों से यह स्पष्ट है कि शिक्षा प्रणाली में मूल्यमापन प्रक्रिया में आधारभूत परिवर्तन लाए बिना शिक्षा में गुणवत्ता की मात्रा में वृद्धि नहीं हो सकती। मूल्यॉंकन का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। गुणवत्ता प्राप्त करने के

लिए सतत एवं व्यापक मूल्यॉंकन अधिक सहायक सिद्ध हो सकता है। सतत एवं व्यापक मूल्यॉंकन की अवधारणा को शिक्षण अधिगम की व्यवस्थाओं में अभिन्न स्थान देने के पीछे यह मत अथवा दर्शन अधिक हावी रहा है कि इसे एक युक्ति एवं उपकरण के रूप में उपकल्पित करते हुए शिक्षण अधिगम की संक्रियाओं को जीवन्त सार्थक गुणवत्ता पूर्ण एवं प्रभावी बनाया जाये। यह उभरते वैश्विक परिपेक्ष्य में भी एक अति महत्वपूर्ण युक्ति का स्थान ग्रहण कर चुकी है। यह छात्र के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के संबंध में मूल्य का अंकन करता है। इसका प्रवेश मापन की अनेक कमियों को दूर करने के लिए किया गया है।

शिक्षा विकास में परीक्षण प्राचीन काल से होता आ रहा है। शिक्षा दीक्षा में मंत्रोच्चरण की दक्षता को जाँचने के लिए लिया जाने वाला मौखिक प्रशिक्षण या गुरू द्रोणाचार्य द्वारा एकलव्य का लिया गया पूर्व परीक्षण शैक्षिक मूल्य मापन अर्थात मूल्यॉंकन ही है। इस प्रकार शैक्षिक एवं मानसिक मापन की आवश्यकता प्राचीन काल से रही है। आज उसके सिर्फ स्वरूप में परिवर्तन आया है।

"शिक्षा ज्ञान की कुंजी है" तथा शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। विकास नैसर्गिक निरंतर होता रहता है। बच्चों में प्रतिभा का अथांह भंडार होता है। इन प्रतिभाओं को विनष्ट होने से बचाना शिक्षा का मुख्य कार्य है। उन्नति की दौड़ में तथा आज के राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में शिक्षा विकास की आधारशिला है। जीवन की चहुँमुखी और उत्तरोक्त गुणनात्मक प्रगति का मार्ग शिक्षा की ज्योति से ही सर्वाधिक प्रकाशित होता है। किसी देश की प्रगति में उस देश की शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

अभी हाल में सी.बी.एस.ई. और एन.सी.ई.आर.टी. के शैक्षिक मूल्यमापन एवं अनुसंधान विभाग द्वारा शिक्षा में सतत एवं व्यापक मूल्यॉंकन का प्रयोग कक्षा अध्ययन में किया जा रहा है। इस संदर्भ में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक कक्षा के अध्यापकों को सी.सी.ई. प्रशिक्षण दिया गया। गुणवत्ता विकास में एवं बालक के भविष्य का भाग्य विधाता शिक्षक इस रूप में जिम्मेदारी,

कर्तव्यनिष्ठा, समानता की भावना आदि जैसे गुणों से परिपूर्ण होने अध्यापक विकास में व्यावसायिक कोशल का उपयोग कक्षा में करने हेतु आवश्यक है कि शिक्षक अध्यापन की क्षमता में दक्षता हासिल करने उस पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

नई शिक्षा प्रणाली में मूल्यमापन नीति इस सिद्धान्त पर आधारित है कि, विद्यालयीन परीक्षा प्रणाली को अधिक सशक्त बनाया जाये। सतत एवं व्यापक मूल्यॉकन को नियमित रूप से विद्यालयों में लागू किया जाये तथा इसका प्रयोग विद्यार्थी के उपलब्धि स्तर को बढ़ाने के लिए अधिगम का मूल्यमापन परीक्षा के साथ वर्षभर होता रहे न कि केवल निर्धारण ˙(ाmेउमदज) के लिए। अतः निर्माणात्मक (थ्वतउंजपअम) एवं संकलनात्मक ˚(नउउंजपअम) परीक्षण का प्रयोग विद्यार्थी की दैनिक निरीक्षण, प्रात्यक्षिक प्रकल्प, उपकम कृती, चाचणी परीक्षा से अधिगम कठिनाईयाँ, कमजोरियों (छात्रों की उत्कृष्ट प्रगति एवं अधिगम कठिनाई) तथा अक्षमताओं का निदान करके उपचारात्मक शिक्षण देकर मार्गदर्शन करने के लिए किया जाये ताकि उसकी शिक्षण अधिगम क्षमता को बढ़ाया जा सके। विद्यार्थी फेल होकर उसका वर्ष बर्बाद न हो और उपर की कक्षा में उसे श्रेणी माध्यम से पास कर प्रवेश मिल सके।

सतत का शाब्दिक अर्थ है निरन्तर अर्थात विद्यार्थियों के उपलब्ध स्तर का लगातार मूल्यमापन, व्यापक का शाब्दिक अर्थ है वृहत (सर्वकष) विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उपलब्धि स्तर का सूक्ष्म मूल्याँकन अर्थात् शिक्षार्थी द्वारा विद्यालय में सीखे गये अनुभवों का लगातार मूल्यमापन। मूल्यमापन यह प्रकिया है जिसमें यह ज्ञात किया जा सके कि शिक्षार्थी में किस सीमा तक वांछित परिवर्तन लाए जा चुके हैं। अतः सतत एवं व्यापक मूल्याँकन नई शिक्षा प्रणाली का एक प्रमुख आधार स्तंभ है। नई शिक्षा प्रणाली (परीक्षा सुधार) में सतत एवं व्यापक मूल्याँकन के महत्व को देखते हुए एम.एस.सी.ई. आर.टी. महाराष्ट्र राज्य, पुणे के शैक्षिक मूल्यमापन एवं अनुसंधान विभाग ने वर्तमान अध्ययन वर्ष 2010–11 में सतत् एवं व्यापक मूल्याँक विद्यालय प्रणाली

में लागू किया है इस प्रणाली के परिपेक्ष्य में शिक्षकों को जो सी.सी.ई. लागू करने हेतु (दिनाँक 29-30 अक्टूबर 2010 एवं 8-9 फरवरी 2011) को चार दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस सी.सी.ई प्रशिक्षण पर शिक्षकों की समझ ज्ञात करने का यह छोटा सा प्रयास है।

प्रारंभ से लेकर आज तक शिक्षा के बदलते परिवेश में शैक्षिक गुणवत्ता संवर्धन हेतु अनेक विचार मंथन किए जा रहे हैं। इस प्रक्रिया में अनेक आयोगों ने अपनी-अपनी संतुष्टियाँ दी है। सिजमें सर्जेन्ट योजना 1944, माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952-53, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 एवं 1986, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1975, 1988, 2000, 2005 आदि ने परीक्षा सुधार एवं प्रशिक्षण सुधार हेतु सुझाव दिये हैं। साथ ही केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड एन.सी.ई.आर.टी. आय.सी.एस.ई. आय.जी. सी.एस.ई, आय.बी. संस्था ने परीक्षा सुधार की ओर विशेष रूप से सतत एवं व्यापक मूल्याँकन करने हेतु तथा श्रेणी की व्यवस्था लागू करने पर जोर दिया है। अब अनेक परिवर्तन की मालिका लेकर "शिक्षण अधिकार" अधिनियम 2009 आया। शैक्षिक गुणवत्ता एवं मात्रात्मक विकास की दृष्टि में हर एक बालक को गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण यह इस अधिनियम का उददेश्य है। इसके अन्तर्गत परीक्षा सुधार एक क्रान्तिकारी परिवर्तन है।

मूल्यमापन अर्थात मूल्याँकन पद्धति में बदल अध्ययन-अध्यापन के बदल की दिशा बतलाने वाला है। पहले चार, छ-महीनों अथवा वर्ष अन्तराल से परीक्षा होती थी तब बालक के अध्ययन-शैक्षिक प्रगति की तरफ ध्यान देने की व्यवस्था नहीं थी। परीक्षा सिर्फ रटन अर्थात् स्मरण पर आधारित रहने से विशिष्ट साँचे में ढ़ले बालमन पर बड़ा बोझ डालने वाली थी। अब माहिती का बोझ उठाने लगाने वाली परीक्षा न रहते हुए छात्रों का समय-समय पर मूल्याँकन होगा। अब शिक्षक को भी शिक्षण के नये विद्या का परिचय दिया जा रहा है ताकि वे प्रशिक्षित होकर विद्यार्थी व्यवहार का सम्पूर्ण मूल्यमापन करने में सक्षम है। तभी वे विद्यार्थी स्तर का परिमाप कर पायेंगे तथा उनके भविश्य कथन व परामश में

सहायक दृष्टिकोण अपनाये जा सकेंगे। बालक कैसे सिखता है ? उसको क्या अच्छा आताहै ? उसे कहां कठिनाई आती है? इसका समावेश सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति में किया गयाहै। स्मरण के साथ ज्ञान उपयोजन विचारशीलता, सर्जनशीलता, कल्पकता जैसी क्षमता बालक के प्रतिभाका सर्वांगिण विकास में बौद्धिक विकास के साथ शारीरिक कौशल, भावनिक अंगों का परिपोष करती है। यह उद्देश्य सामने रखकर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पद्धति का स्वीकार किया गया है, जिसमें बच्चे स्कूल जीवन को बाहरी जीवन के साथ जोड़े, वह स्वयं कुछ सिखे, उसके बारे में जाने, समझे एवं एक साथ रहने की भावना का विकास कर सके। साथही शिक्षक नये दृष्टिकोण की खोज में विश्व को कक्षा के अन्दर लाने का प्रयास करें।

इस प्रयास की दिशा में शिक्षक की गुणवत्ता भी निर्भर करती है। आने वाली नयी पीढ़ी को बौथ्द्धक परम्परायें, तकनीकी कौशल पहुंचाने और सभ्यता विकास को प्रज्वलित रखने में सहायता करने शिक्षक प्रशिक्षण महत्वपूर्ण योगदान है। नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति मे प्राथमिक स्तर पर बालकेंन्द्रित शिक्षण विधि एवं मूल्यमापन की नवीन विधियों का प्रयोग करने पर बल दिया है। इसी दिशा में महाराष्ट्र सरकार द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन राज्य के सभी विद्यालयों में सत्र 2010-2011 को लागू किया गया है। शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए सी.सी.ई. एक कारग़र उपाय है। अतः निर्धारित उद्देश्यो की पूर्ति के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड दिल्ली विभाग के अन्तर्गत शिक्षामें गुणवत्ता लाने हेतु कक्षा में सी.सी.ई. प्रणाली को लागू करने पर शिक्षकों को सी.सी.ई. प्रशिक्षण दियागया ।

प्रस्तुत अध्ययन इसी सी.सी.ई. प्रशिक्षणकी समझ के दिशा में एक प्रयास है जो विद्यालयीन शिक्षकों को आने वाली समस्याओं एवं बालक के भविष्य निर्माण में एक सफल प्रबोधन विचार साबित होगा। यह अध्ययन महाराष्ट्र राज्य के जिला वर्धा के ग्रामीण तथा शहरी विभाग में स्थित केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत आने वाले जवाहर नवोदय विद्यालय एवं

केन्द्रीय विद्यालयों में पढ़ा रहे शिक्षकों को आने वाली समस्याओं पर आधारित है।

1.2 सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा :–

मूल्यांकन – मूल्यांकन एक स्वतः परिभाषित शब्द है । जब हम किसी वस्तु की गुणवतता का आकलन करते हैं तो उसका मूल्यांकन करना होता है। मूल्यांकन से हमें किसी वस्तु या किसी प्रणाली की उपयोगिता के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त होता है। मूल्यांकन बात जब हम शिक्षा के क्षेत्र में करते हैं तो हम एक तंत्र, उस तंत्र में शिक्षा देने वाले, शिक्षा ग्रहण करने वाले शिक्षा के साथ प्रयोग में लाये जा रहे inputs यहां तक कि शिक्षा के संबंध में बनाये गये नीति निर्देशों का भी मूल्यांकन करते हैं। मूल्यांकन हमें शासन और शिक्षाविदो द्वारा किये जा रहे प्रयासों का प्रतिफल हमारे सामने रखता है और बताता है कि हम कहां तक सफल हुए हैं।

मूल्यांकन हमारे छात्र–छात्राओं के ज्ञान की सीमा निर्धारित करता है एवं उनके क्षमताओं, बुद्धि, व्यक्तित्व, रूचियों, अभिवृत्तियों, कौशल आदि का गुणात्मक निर्णय करता है । कई शिक्षाविदों द्वारा मूल्यांकन की परिभाषा दी गई है, जिसमें एक सटीक परिभाषा क्रानबैक द्वारा दी गई है । "मूल्यांकन का संबंध सम्पूर्ण शिक्षा कार्य से है। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षण में सुधार लाना है। यह उन कारणों, अभिवृत्तियों, स्वभाव, कौशल, बोध सौंदर्यानुभूति का पता लगाने में है जो छात्र में निहित है। बच्चों को शिक्षित करना हमारा उद्देश्य है। इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है। जिस पर हमारी पाठ्यपुस्तकें बनती है और इन्हीं पुस्तकों शिक्षक बच्चों को पढ़ाता है। बच्चों को शिक्षक जो सिखाता है या बच्चे अपने स्तर के अनुरूप जो सीखते हैं, उसको जानने के लिए हमें मूल्यांकन की आवश्यकता पड़ती है। अतः हम कह सकते हैं कि मूल्यांकन करने के उद्देश्य निम्नानुसार है :–

(i) कक्षा अनुरूप निर्धारित दक्षताओं से कितनी दक्षताऐं बच्चे ने सीखी है।

(ii) बच्चों द्वारा कितनी व कहां कहां पर त्रुटियां की गई है।

(iii) बच्चों ने क्या क्या नहीं सिखा है ।

(iv) बच्चों द्वारा सीख न पाने की क्या कारण हो सकती है।

(v) किस विषय में एवं किस क्षेत्र में अतिरिक्त अभ्यास कराने की आवश्यकता है।

अभिप्राय यह है कि मूल्यांकन . के द्वारा बच्चों की उपलब्धियों के साथ–साथ उनकी कमजोरियों तथा कठिनाइयों का भी पता किया जाता है।

सतत् शिक्षा एवं व्यापक शिक्षक मूल्यांकन एक तरह की अभिवृत्ति है। यह शैक्षिक (Scholastic) एवं गैर शैक्षिक (Co-scholastic) क्षेत्रों को सम्मिलित करके उसका मूल्यांकन करने का कार्य करता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन योजना छात्रों के एक स्कूल आधारित मूल्यांकन करके छात्रों के विकास के सभी पहलुओं को शामिल करता है। सतत् एवं व्यापक शिक्षा का नियमित एवं निरन्तर आंकलन है जो इकाई परीक्षण विद्यार्थियो ंकी शिक्षा प्रणाली में सुधारात्मक उपाय लागू करके दुबारा परीक्षण और उनके आत्मा अवधारणा के मूल्यांकन के लिए शिक्षक और छात्रो ंको क्रियात्मक का गुण है। व्यापक से दूसरी प्रयास पर पूराक रने क`लिए शैक्षिक और गैर शैक्षिक दोनों क्षेत्रो के द्वारा छात्रों के विकास के लिए कार्य करता है। सतत् शिक्षा मूल्यांकन एक प्रतिक्रिया है। जिसमें विद्यालय एवं विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर का निरन्तर एवं नियमित विकास का मूल्यांकन करता है।

सतत् (निरन्तर) मूल्यांकन का तात्पर्य उन परीक्षण से है जिससे छात्र के अध्ययन तथा उपलब्धियों का प्रतिमाह लेखा जोखा लिया जाता है। सतत् मूल्यांकन पद्धति में आमतौर पर सम्पूर्ण पाठयकम को दस इकाईयों में विभक्त कर दिया जाता है। प्रत्येक माह एक इकाई का अध्यापन कराने के पश्चात

स्वाभाविक रूप से परीक्षण किया जाता है जिसका व्यवस्थित अभिलेख रखा जाता है। प्राथमिक तथा पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में सतत् मूल्यांकन पद्धति कहीं कहीं प्रचलित है पर यह उस रूप में नहीं है जैसा कि सतत् मूल्यांकन के मौलिक स्वरूप में होना चाहिए। प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों की प्रगति का दैनिक लेखा जोखा तैयार करने हेतु अध्यापकों द्वारा उनका दैनिक मूल्यांकन किया जाता है।

व्यापक मूल्यांकनः–

दक्षता आधारित मूल्यांकन प्रतिदिन कक्षा में शिक्षण के अन्तर्गत छात्रों में दक्षता सिखाने के बाद किया जाता है पर छात्रों की दक्षता के अलावा उन में संज्ञानात्मक पक्ष (ब्वहदपजपअम ।चचतवंबी), भावनात्मक पक्ष (Emotional Approach) एवं क्रियात्मक पक्ष (Activist Approach) भी शामिल होते हैं। अतः छात्रों के चहुमुखी विकास के लिए व्यापक मूल्यांकन की जरूरत होती है। पाठ्यक्रम संबंधी क्रियाऐं इसके अन्तर्गत वाद–विवाद, खेलकूद, भाषण, नाटक, तैरना, स्काउटिंग एवं कार्यानुभव आदि क्रियाऐं भी शमिल हैं जिनका मूल्यांकन बहुत जरूरी होता है। अभितृप्ति– इसके अन्तर्गत समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय भावनात्मक एकता शामिल है।

इसके अन्तर्गत समय नियमबद्धता, नैतिकता, उत्तरदायित्व की भावना, स्वच्छता एवं सहयोग, सत्यनिष्ठता, नियमितता, समाजसेवा, स्वास्थ्य विवरण, लम्बाई, भार, स्वास्थ्य शारीरिक विकास आदि। छात्रों की अभिरूचियों– इसके अन्तर्गत साहित्य, संगीत, कला एवं प्रकृति दर्शन शामिल हैं।

1.3 विभिन्न परिप्रेक्ष्य में सतत् एवं व्यापक मूल्यांक

भारत में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य–

डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948 डॉ. मुदालियर की सरंक्षता में गठित माध्यमिक शिक्षा आयोग 1953 में

प्रचलित परीक्षाओं की अविश्वसनियता एवं उनके परिणामो पर तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की थी किन्तु इनमें सुधार लाने हेतु स्पष्ट एवं मुखर संस्तुति की कोठारी आयोग (1964-66) के माध्यम से ही बल प्राप्त हो सका। इस संबंध में कोठारी आयोग की मुख्य इस प्रकार थी।

प्रत्येक विद्यालय द्वारा अपनी ही स्तर पर किये जाने वाला आंतरिक आंकलन या मूल्यांकन बहुत अर्थपूर्ण होता है तथा इस पर अधिकाधिक महत्व दिया जाना चाहिऐ। यह मूल्यांकन व्यापक रूप से होना चाहिऐ जिसमें विद्यार्थियों के विकास के उन सभी पक्षो का आंकलन हो जो बाह्य परीक्षाओं द्वारा मापित होते है तथा व्यक्तित्व के उन विशेष को रूचियों एवं अभिवृत्तियों का भी जो उनके द्वारा नही होता। विद्यालय के सम्पूर्ण शैक्षिक कार्यक्रमो के तहत आन्तरिक मूल्यांकन समाविष्ट होना चाहिए तथा इसका उपयोग शिक्षा एवं शिक्षण में सुधार के लिये होना चाहिए न कि विद्यार्थियों के निष्पति स्तर को प्रमाणित करने हेतु। यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि आन्तरिक मूल्यांकन के सभी बिन्दुओ पर परिणात्मक ढंग से आंकन करने की आवश्यकता नही है। इनमें से कुछ बिन्दुओ को विवरणात्मक ढंग से मूल्यांकित करना चाहिए। ये परिणाम पृथक पृथक दर्शाए तथा इन्हे कृत्रिम रूप से एक सम्पूर्णाक के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास नही है।

3 मार्च 1986 ई. को तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री वी.पी. नरसिन्हाराय ने एक विशेष समिति की बैठक आहूत की जिससे राज्यों के शिक्षा मंत्री परीक्षा सुधार से सम्बंधित विशेषज्ञ शामिल थे। इस समिति ने अधोलिखित संस्तुति की।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) की योजना होनी चाहिए जिसे अत्यन्त सुविधा वंचित संस्थाऐ भी लागू कर सके। इसके अन्तर्गत शैक्षणिक निष्पाति विद्यालयीन मंत्रो की अवधि से जुडी व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणो, रूचियों, अभिवृत्तियो तथा पाठ्यक्रम सहमति क्रियाओं में दक्षता के आंकलन को

शामिल किया जाए। सभी विद्यार्थियों की शैक्षणिक निष्पत्तियों से भिन्न व्यक्तित्व के कतिपय पक्षों का भी आकलन अवश्मेत होना चाहिए।

कोठारी आयोग – 1964–66 के आधार पर मूल्यांकन

मूल्यांकन की कमिक प्रकिया है जो कि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक महत्वपूर्ण अंग है और जो शिक्षा के उददेश्यो से घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है।

आयोग ने प्रचलित पद्धति में सुधार करने के लिए निम्न लिखित विचार व्यक्त किये है –

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को विश्वविद्यालयों की सहायता से केन्द्रीय परीक्षा सुधार यूनिट की स्थापना करनी चाहिए।
2. विश्वविद्यालय के शिक्षको की सेमिनारों, वर्कशाप एवं विचार सम्मेलनों का आयोजन करके मूल्यांकन की नवीन उन्नत विधियों की जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।
3. शिक्षक विश्वविद्यालयों में बाह्य परीक्षा प्रणाली को समाप्त स्वयं अध्यापको द्वारा आंतरिक तथा कमिक मूल्यांकन की प्रणाली को लागू किया जाना चाहिए।

राधाकृष्णन कमीशन के अनुसार मूल्यांकन

देश मे प्रचलित मूल्यांकन व्यवस्था की आयोग ने तीव्र आलोचना की कि विश्वविद्यालय शिक्षा पर परीक्षा प्रभुत्व छाया है। आयोग ने उल्लेख किया यदि हम विश्वविद्यालय की शिक्षा में केवल एक विषय में सुधार का सुझाव दे तो वे परीक्षाओं में सम्बन्धित होनी चाहिये। यह सत्य है कि परीक्षाओ के प्रति भारत तथा विश्व भर में प्रबल असंतोष है परंतु हम पूर्ण रूप से दृष्टिकोण के पक्ष में नही है। यदि परीक्षाओं की उचित प्रकार से व्यवस्था की जाए तो वे शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख स्थान ग्रहण कर

सकती है। परीक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए आयोग ने निम्न सुझाव प्रस्तुत किये।

1. प्रत्येक विश्वविद्यालय में एक परीक्षक बोर्ड की नियुक्ति की जाये।
2. छात्रो के कक्षा कार्यो को भी महत्त्व प्रदान किया जाये। 11/3 अंको कक्षा के लिये ही सुरक्षित रखा जाये।
3. स्नातकोत्तर तथा व्यावसायिक परीक्षाओ में लिखित परिणामो के साथ-साथ मौखिक परीक्षाओं को भी सम्मिलित किया जाये।
4. परीक्षाओ का चुनाव योग्यता के आधार पर अत्यन्त सावधानी के साथ किया जाये। किसी अध्यापक को 3 वर्ष से अधिक समय तक परीक्षक न बनाया जाये।

राष्ट्रीय शिक्षा निति 1986 के अनुसार

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन जिसमें अनुदेशन की पूरी अवधि तक प्रदत्त शिक्षा के शैक्षणिक एवं शैक्षणिकेत्तर दोनो ही पक्ष शामिल है को क्रियान्वित करना। इस अवधारणा को राज्य स्तरो पर परीक्षा निकायो बोर्ड एवं विश्वविद्यालय के माध्यम से निर्धारित प्रपत्रों के अनुरूप लागू करने के लिये निर्देशित किया गया। कहने की आवश्यकता नही कि मूल्यांकन का यह स्वरूप औपचारिक रूप मे स्वीकृत हो जाने पर भी अभी तक जमीनो तौर पर अधिकांश संस्थाओ की कार्य पद्धति में स्थान नही पा सका है जिससे हमारी शिक्षण व्यवस्थाओ की गुणवत्ता कुप्रभावित हुई है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार आकलन और मूल्यांकन का अर्थः-

भारतीय शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा, तनाव और दुश्चिन्ता से जुड़ा हुआ है। पाठ्यचर्या की परिभाषा और नवीनीकरण के सभी प्रयास विफल हो जाते हैं अगर वे स्कूली शिक्षा प्रणाली में जड़े जमाऐं मूल्यांकन और परीक्षा तंत्र के अवरोह से नहीं जूझ सकते। हमें परीक्षा के उन दुष्प्रभाव

की चिंता है जो सीखने-सिखाने की की प्रक्रिया को सार्थक बनाने और बच्चों के लिए आनंददायी बनाने के प्रयासों पर पड़ते हैं। वर्तमान में बोर्ड की परीक्षाऐं स्कूली वर्षो में होने वाले हर आकलन और हर तरह के परीक्षण को नकारात्मक रूप से ही प्रभावित करती है। इसमें शाला पूर्व-स्तर में होने वाला आकलन और परीक्षण भी शामिल है।

एक अच्छी मूल्यांकन और परीक्षा पद्धति सीखने की प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन सकती है जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षा तंत्र दोनो को ही विवेचनात्मक और आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि से फायदा हो सकता है। यह भाग मूल्यांकन और आकलन को संबोधित करते हुए शुरू होता है।

आकलन एवं मूल्यांकन उद्देश्यः-

शिक्षा का सरोकार एक सार्थक व उत्पादक जीवन की तैयारी से होता है और मूल्यांकन आलोचनात्मक प्रतिपुष्टि देने का तरीका होना चाहिए। यह प्रतिपुष्टि इस बात की होती है कि हम ऐसी शिक्षा लागू करने में किस हद तक सफलता प्राप्त कर पाये। इस परिपेक्ष से देखे तो वर्तमान में चल रही मूल्यांकन की प्रक्रियाऐं जो केवल कुछ ही योग्यताओं को मापती और आकलित करती है बिल्कुल ही अपर्याप्त है और शिक्षा के उद्देश्यों की ओर प्रगति की संपूर्ण तस्वीर नहीं खींचती है।

लेकिन मूल्यांकन का यह सीमित प्रायोजन भी, अकादमिक और शैक्षिक विकास पर प्रतिपुष्टि देने वाला, तभी बन सकता है जब शिक्षक पढ़ाने से पहले ही न केवल आकलन के तरीको की तैयारी करें बल्कि मूल्यांकन के मानको और उसके लिए प्रयुक्त होने वाले औजारों की भी तैयारी करे। विद्यार्थियों की उपलब्धि की गुणवत्ता की जाँच के अलावा एक अध्यापक को विभिन्न विषयों में उनकी उपलब्धि की जानकारी इकठ्ठा कर उसका विश्लेषण कर और उसकी व्याख्या करनी होगी तभी अध्यापक विभिनन क्षेत्रों में विद्यार्थियों के अधिगम की

सीमा की एक समझ बना पायेंगे। आकलन का प्रायोजन निश्चय ही सीखने सिखाने की प्रक्रियाओं एवं सामग्री का सुधार करना है और उन लक्ष्यों पर पुनर्विचार करना है जो स्कूल के विभिन्न चरणों के लिए तय किये गये हैं।

शैक्षिक मापन और मूल्यांकन का सामान्य परिचय

बच्चे अपने आस-पास के वातावरण तथा अपने नित्य के किया कलापो से कुछ न कुछ सीखते है। उनका सीखना बिना किसी बंधन के सहज रूप से चलता रहता है। परन्तु स्कूलो मे बच्चों को सिखाने की स्थिति कुछ अलग हो जाती है क्योकि यहां हम उनके लिये कुछ पाठ्य कम, तरीके, नियम, समय सीमा तय कर देते है।

सी.बी.एस.ई. विद्यालयो में शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक प्रवृत्तियां

छात्रो की साप्ताहिक प्रगति को जानने हेतु अध्यापक साप्ताहिक मूल्यांकन का सहारा लेता है। अध्यापक द्वारा सप्ताह भर के कार्यो का निरीक्षण, पर्यवेक्षण, तथा मूल्यांकन किया जाता है। जिसके आधार पर शिक्षक को आगे आने वाले सप्ताह के कार्यो को सम्पन्न कराने का मौका मिल जाता है। जिसके कारण छात्र को उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करके उनकी बुनियादी कमजोरियो का निराकरण कर लिया जाता है।

पिछले एक वर्ष में भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में महत्तपूर्ण परिवर्तन आया है। ऐसा एक परिवर्तन माध्यमिक शिक्षा के केन्द्रीय बोर्ड द्वारा सी.बी.एस.ई. विद्यालयो में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को लागू किया गया है। शिक्षा के नियमित समय अंतराल में छोटे भागो पर विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सहयोग देकर सीखने की प्रक्रिया में पहचानने में मदद करता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली छात्र विकास की प्रणाली मानी जाती है। इसमे परीक्षा सत्र को दो भागो में बाटा गया है। इसमें प्रथम सत्र छः माह में समाप्त होता है और दूसरा सत्र चार माह मे समाप्त होता है। दोनो सत्रो में इकाई परीक्षण लिया जाता है।

शैक्षिक क्षेत्रः–

शैक्षिक क्षेत्र एक मूल्यांकन का होता है। यहाँ शैक्षिक क्षेत्र से संबंधित मूल्यांकन होता है। इसमें दो प्रारंभिक और एक समेटिव मूल्यांकन करना होता है। मूल्यांकन ग्रेड में संकेत किया जाता है। इसमें 9 बिन्दू अनुयतांक मापनी का प्रयोग किया जाता है। कुल मिलाकर दो पक्ष पर प्रारंभिक आकलन में एफ.ए–1, एफ.ए–2, एफ.ए–3, एफ.ए–4 और समेकित के समस्त ग्रेड मूल्यांकन सेमिस्टर–1+सेमिस्टर दिया जाता है।

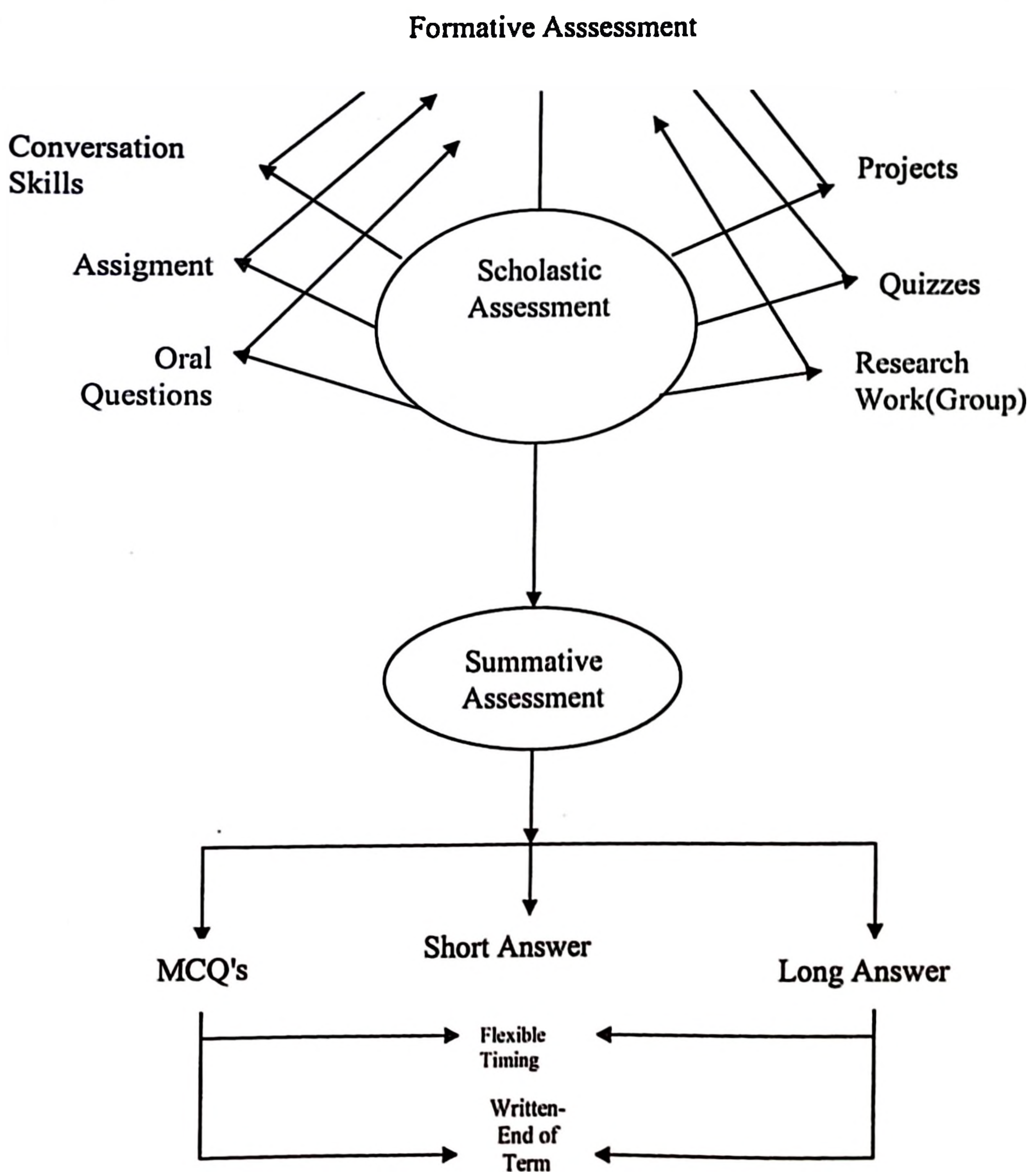

गैर शैक्षिक (Co- Scholastic)

गैर शैक्षिक क्षेत्रों का एक मूल्यांकन होता है। इसमें छात्राओं की सह–शैक्षिक क्रियाओं का मूल्यांकन किया जाता है तथा इसमें ग्रेडिंग 5 बिन्दू अनुमतांक मापनी का प्रयोग किया जाता है। स्वजागरूकता, समस्या हल, निर्णय, गंभीर सोच, रचनात्मक सोच, पारस्परिक रिश्तें आदि।

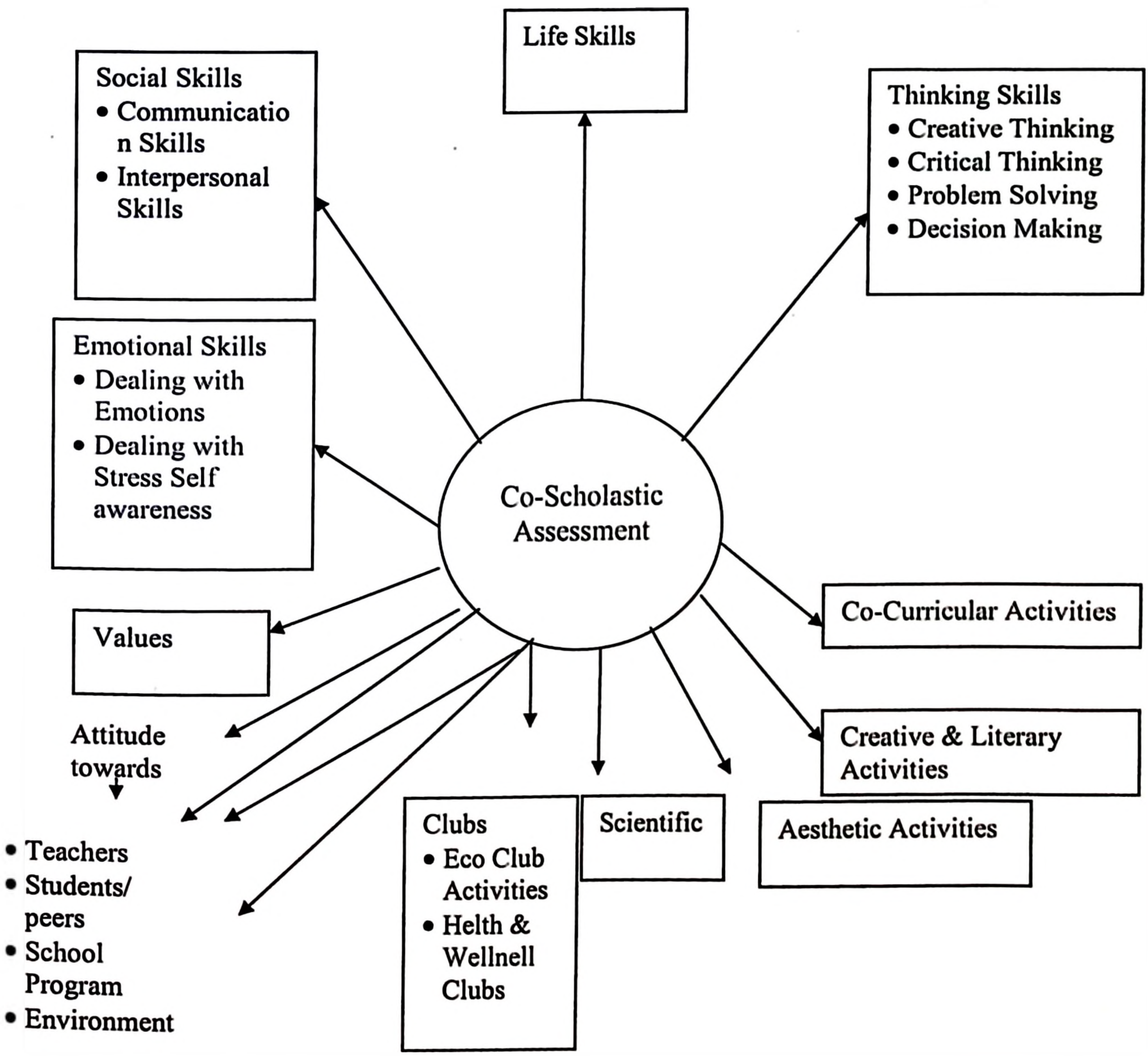

1.4 लघु शोध की आवश्यकता एवं महत्व

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का महत्व एवं प्रकार्यो को सचमुच गतिशील एवं सार्थक बनाए रखने की दृष्टि से मूल्यांकन के अन्तर्गत शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक दोनो ही प्रकार की निष्पत्तियो पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि विद्यार्थी किसी क्षेत्र में न्यूनतम प्रदर्शित करता है तो उसे निदानात्मक एवं सुधारात्मक युक्तियों एवं उपायो की सहायता से अपेक्षित स्तर तक पहुचाना एक अच्छी व्यवस्था के उददेश्यो में शामिल होता है। सतत् एवं मूल्यांकन (CCE) विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रो में उपलब्धियों एवं उनसे सम्बन्धित प्रगति स्तर की नियमित रूप में आकलित करने में सहायक होता है। यह विद्यार्थियों की कमियों, उसकी सकारात्मक क्षमताओं उनकी अधिगम आवश्यकताओं को जानने समझने में शिक्षक की विशेष मदद करता है। जिससे वह शिक्षण की इकाई में उपेक्षित सुधारात्मक युक्तियों का सही रूप में प्रावधान कर लेता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यालयो में पढा रहे शिक्षको को प्रभावी शिक्षण युक्तियाँ एवं रणनीतियों के अनुप्रयोग में सहायता करता है। सी.सी.ई. सर्वांगिण विकास में मार्ग प्रशस्त कर भावी अध्ययन में निर्देशन एवं परामर्श देने में सहायक है। यह विद्यार्थियों की कमियो, सकारात्मक क्षमता अधिगम आवश्यकता जानने में शिक्षक की मदद करता है। इसमे विद्यार्थी का शैक्षणिक एवं सह शैक्षणिक प्रगति के साथ व्यक्तित्व के विविध पक्षो में रूचि, अभिवृत्ति, आदतो, मूल्य, चरित्र में होने वाले रूपान्तरण का जायजा मिलता है। यह अभिप्रेरणा बढाकर अधिगम लक्ष्य तक पहुँचने तथा गुणवत्ता शरण रोकने मे मदद करता है। कार्यो की उपयोगिता विभिन्न प्रकार परीक्षाओं सर्वाधिक परिक्षण, मासिक परीक्षण, निष्पादन परीक्षण, एकल परीक्षण, तथा सत्रान्त परीक्षणो को अपेक्षित निरन्तरता एवं व्यापकता के अनुसार अनुप्रयोग पर बल दिया जाता है। छात्र प्रतिभाग गुणवत्ता, प्रगति लेखा जोखा रखने हेतु उनका पार्श्वचित्र निर्मिती मे आधार मिलता है। अध्यापक - विद्यार्थी, अभिभावक में अधिगम व्यवस्था

न्यूनताओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न कर विद्यार्थी की अधिगम कमियों को सुधारने मे अवसर प्राप्त करता है।

1.5 शोध का मूल आधार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में इस बात का मूल आधार है कि, केन्द्रीय माध्यिमिक शिक्षा बोर्ड के अन्तर्गत आने वाले जवाहर नवोदय विद्यालय एवं केन्द्रीय विद्यालय आदि में पढ़ा रहे वर्धा जिला (महाराष्ट्र) के ग्रामीण एवं शहरी शिक्षको को उनके विभिन्न विषयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में बहुत ज्यादा समस्याओं का सामना करना पड़ा।

1.6 समस्या कथन

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा विद्यालयों में चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को आने वाली समस्याओं का अध्ययन।

1.7 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

मूल्यमापन अर्थात मूल्यांकन द्वारा शिक्षण के परिणामो एवं उनसे सम्बन्धित प्रक्रियाओं के आंकन पर बल दिया जाता है। जब यह मूल्यांकन शिक्षण क्रिया का अभिन्न अंग बनकर उसे नियमित रूप मे संगति दिशा एवं उत्तरोत्तर गतिशीलता प्रदान करता है तो इसे सतत मूल्यांकन का नाम दिया जाता है। मूल्यांकन को शैक्षणिक कियाकलापो से निरन्तरता के आधार पर जोड दिया जाये तो इसे ही सतत मूल्यांकन की संज्ञा दी जाती है।

मूल्यांकन के केवल संज्ञानात्मक पक्ष पर ही जोर न देकर शैक्षणिक व्यवस्थाओ द्वारा पडने वाले संज्ञानेतर पक्षो पर प्रभाव तथा कौशल रूचि, अभिवृत्ति मूल्य एवं व्यक्तित्व विकास के आकलन को भी मूल्यांकन की परिधि में लाया जाये तो इसे व्यापक मूल्यांकन कहा जाता है।

इन दोनो ही अवधारणा को संयुक्त करते हुऐ एक नवीन सम्प्रत्यय के रूप में सतत एवं व्यापक मूयांकन की प्रणाली का अभ्युदय हुआ है।

1.7 शोध के उददेश्य

1. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को विभिन्न विषयो में आने वाली समस्याओ का अध्ययन।
2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयो में शिक्षको को आने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली समस्याओ का अध्ययन।

1.8 शोध प्रश्न

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में सी.बी.एस.ई. विद्यालयीन शिक्षको को उनके विभिन्न विषयो में क्या क्या समस्याऐ आ रही है?
2. ग्रामीण एवं शहरी सी.बी.एस.ई. विद्यालयो में शिक्षको को उनके विभिन्न विषयो में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में क्या क्या समस्याऐं आ रही है?
3. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन संकल्पना के प्रति सतत एव व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण प्राप्त विद्यालयीन शिक्षको की क्या समझ है?

1.9 शोध की परिसीमाएँः-

यह अध्ययन वर्धा जिले (महाराष्ट्र राज्य) के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड संस्थाओ तक सीमित है जिसमें हमने वर्धा जिले के सी.बी. एस.ई. अंतर्गत विभिन्न विषयों में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शिक्षको को आने वाली समस्याओ का अध्ययन करना है।

जिसमें

1. **केन्द्रीय विद्यालय, स्थान – सी.ए.डी. (CAD) कैम्प, पुलगांव।**
2. **जवाहर नवोदय विद्यालय, स्थान सेलु (काटे)**

इन दोनो विद्यालयो के कक्षा–8वी और कक्षा–10वी के शिक्षको को उनके विभिन्न विषयो में सी.सी.ई. में आने वाली समस्याओ का अध्ययन करना है।